स्नातक | मैथिली प्रतिष्ठा | प्रथम पत्र |
प्रथम-खण्ड

डॉ० अरुणकुमार ठाकुर
मैथिली विभाग
जे०एन० कॉलेज मधुबनी

अमृतकर —

मिथिलाक इतिहासमे अमृतकरक नाम सर्वविदित अछि। ई महाराज शिवसिंहक मंत्री बलाउनिमूलक चन्द्रकरक पुत्र ओ श्रीधरक वंशज छलाह। अमृतकर विद्यापतिक समकालीन छलाह। विद्यापति अपन एकगोट पदमे हिनक गुणसत्ता, उदारता ओ विद्वताक हेतु प्रशंसा करने छथि —

नीति निपुण गुण नाह, अंकमे अतिशय आगर।
कोष-काव्य-व्याकरण, अधिक-अधिकारक सागर॥
. . . .
कायस्थ माँह सुप्रसिद्ध भउ चन्द्र तुलाउँ शशिधर।
कवि कण्ठहार कह उच्चरइ अमिअ बरसइ अमिअकर॥

(1) पुरुषपरीक्षाक मैथिली अनुवादक परिशिष्टमे कवीश्वर चन्दाझा हिनका मिथिलाराज्य ओ विशेषतः म० शिवसिंहक सेवाक उल्लेख कयने छथि। डॉ० दुर्गानाथझा 'श्रीश' अपन मैथिलीसाहित्यक इतिहासमे हिनक उपलब्ध पद प्रसंग लिखने छथि जे — 'अमृतकरक अद्यावधि सातगोट पद रागतरंगिणीमे, एकगोट पद रामभद्रपुरक पोथी दुइगोट नेपालक तालपत्रपोथीमे दुइगोट एवं भाषागीत संग्रहमे दुइगोट उपलब्ध अछि, जाहिसँ हिनक उच्चकोटिक कवित्वक परिचय भेटैत अछि। एहिसँ सिद्ध होइत अछि जे ओ लोकप्रिय कवि छलाह। हिनक कमसँ कम एकटा नाटक अवश्य छल रत्नावली-विषयक जकर गीतक पद 'भाषा-गीतसंग्रहमे' उपलब्ध अछि।

Scanned with CamScanner

हिनक शृंगारी पद मात्र उपलब्ध अछि।
मुदा गतबहि पद उपलब्ध अछि जाहि हिनक
कवित्वक गरिमाक परिचायक अछि। ओहि पद समसँ
हि रहबा उच्चकोटिक कविक रूपमे ख्याति अर्जित
कएने छथि। रागतरंगिणीमे संकलित सुरतान्त
वर्णन रहकर दृष्टान्त थिक। रामभद्रपुर पोथीमे
उपलब्ध लोमीलोचनक वर्णनक निम्न लिखित पंक्ति
उल्लेख्य थिक—

(2) आनन विकल सरोरुह रे हेरि अइसन होमान।
नागर लोचन भमर पर रे भमि भमि कर मधुपान॥
गोरि नयन धनि नोनु अरे हेरअ रहए
अभिनवकरक नामसँ जे पद उपलब्ध अछि से अमृतकरहिक
अछि। अमृतकरक बनबाओल रहबा आखटा मन्दिर
रहबनहुँ मिथिलामे वर्तमान अछि।